Class - B.A-2 (Subsidiary)

Name of the Guest Teacher - Khushbu Kumari, dept. of Pol. science, V.S.J. college, Rajnagar, Madhubani, Inmu

Topic - दबाव समूह (Pressure Groups)

Lecture - I

बीसवीं सदी की बदलती हुई परिस्थितियों में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से जुड़े हुए हितों और गतिविधियों ने बहुत अधिक विविधता की स्थिति को प्राप्त कर लिया और ~~राजनीतिक दलों~~ ~~के लिए~~ इन हितों तथा गतिविधियों का उचित प्रतिनिधित्व करने के उद्देश्य से दबाव समूहों का उदय और विकास हुआ। 1908 में आर्थर बैंटले का ग्रन्थ 'Process of Government' प्रकाशित हुआ और इसके बाद डेविड बी. ट्रूमैन ने अपने ग्रन्थ 'Government Process' में उस पर सुधार किया, तभी से दबाव समूहों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। प्रारम्भ में संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और इटली आदि पाश्चात्य लोकतंत्रीय देशों के सम्बन्ध में अनेक साहित्य का प्रकाशन हुआ और इसके बाद विकासशील देशों में भी दबाव गुटों की स्थिति का अध्ययन किया गया। इन सभी अध्ययनों में एक बात समान रूप से पायी गयी कि राजनीतिक व्यवस्था और प्रक्रिया में दबाव समूहों की जो भूमिका सोची जाती है, वस्तुतः दबाव समूह उसकी तुलना में बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका सम्पादित करते हैं।

अर्थ एवं परिभाषा :-

दबाव समूह विशेष हितों के साथ जुड़े हुए ऐसे शासित संगठन होते हैं जो अपने सदस्यों के हितों की रक्षा हेतु सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित करने की चेष्टा करते रहते हैं। दबाव समूह को विभिन्न

Scanned with CamScanner

नामों से सम्बोधित किया गया है 'गैरसरकारी संगठन', लॉबीज, अनौपचारिक संगठन इत्यादि शब्दों का प्रयोग दबाव गुटों के लिए किया जाता रहा है। दबाव समूहों तथा अन्य संगठनों में अन्तर अवश्य है। सभी संगठन दबाव समूह नहीं होते और न हित समूह और दबाव समूह समान होते हैं। जब हित समूह सत्ता को प्रभावित करने के इरादे से राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय हो जाते है तो वे दबाव समूह बन जाते हैं।

ओडिगार्ड के अनुसार, "दबाव समूह ऐसे लोगों का औपचारिक संगठन है जिसके एक अथवा अधिक सामान्य उद्देश्य या स्वार्थ होते हैं और जो घटनाओं के क्रम को विशेष रूप से सार्वजनिक नीति के निर्माण और प्रशासनिक कार्यों को इसलिए प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं कि वे अपने हितों की रक्षा एवं वृद्धि कर सकें।

अतः दबाव समूह ऐसा माध्यम है जिनके द्वारा सामान्य हित वाले व्यक्ति सार्वजनिक मामलों को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं।

दबाव समूह के लक्षण —

(i) दबाव समूह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नीति निर्माताओं को प्रभावित करते हैं।
(ii) दबाव समूहों का सम्बन्ध विशिष्ट मामलों से होता है।

(iii) ये राजनीतिक संगठन नहीं होते और न ही ये चुनाव में भाग लेते हैं।

(iv) दबाव समूह अपने विशेष हितों की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आते हैं और अपने हित पूर्ति के साथ ही समाप्त हो जाते हैं।

दबाव समूहों का वर्गीकरण —

(1) संस्थानात्मक दबाव समूह - संस्थात्मक दबाव समूह राजनीतिक दल, विधानमंडलों, सेना, नौकरशाही, इत्यादि में सक्रिय रहते हैं। इनके औपचारिक संगठन होते हैं, ये स्वायत्त रूप से क्रियाशील होते हैं। ये समूह अपने हितों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ अन्य सामाजिक समुदायों के हितों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

(2) संघात्मक दबाव समूह — संघात्मक दबाव समूह हितों की अभिव्यक्ति के विशेषीकृत संघ होते हैं। इनकी मुख्य विशेषता अपने विशिष्ट हितों की पूर्ति करना होता है। इनमें प्रमुख हैं- व्यावसायिक संगठन, कृषक संगठन, श्रमिक संगठन और सरकारी कर्मचारियों के संगठन, आदि।

(3) असंघात्मक दबाव समूह - ये वे दबाव समूह हैं जो धर्म, जाति, रक्त सम्बन्ध या अन्य किसी परम्परागत लक्षण पर आधारित होते हैं। ये अनौपचारिक तथा सामान्यतया असंगठित होते हैं।

(4) प्रदर्शनकारी या अनियमित दबाव समूह — प्रदर्शनकारी समूह वे हैं जो अपनी माँग को लेकर - गैर-संवैधानिक उपायों का प्रयोग करते हुए प्रदर्शनकारी विरोध और प्रत्यक्ष कार्यवाही का मार्ग अपनाते हैं। इस प्रकार की कार्यवाही के कई रूप हैं, जैसे - जन सभाएँ, बैठक,

Scanned with CamScanner

रैली, विरोध दिवस मनाना, हड़ताल, धरना, सत्याग्रह, अनशन, सार्वजनिक सम्पत्ति को हानि पहुँचाना आदि।

दबाव समूह द्वारा अपनाये गये कार्य-प्रणाली –

① लॉबींग – लॉबींग का सामान्य अर्थ है, विधानमंडल के सदस्यों को प्रभावित कर उनसे अपने हित में कानूनों का निर्माण करवाना। लॉबींग में व्यवस्थापिका के अधिवेशन के समय किसी विशेष विधेयक को विधि में परिणत करवाने या न करवाने में रुचि ली जाती है इस उद्देश्यों से विधायकों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया जाता है। दबाव समूह विशेष रूप से पश्चिमी देशों में इस साधन का उपयोग करते हैं।

② प्रचार व प्रसार के साधन – अपने उद्देश्य की प्राप्ति, जनता में अपने पक्ष में सद्भावना का निर्माण करने और उद्देश्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होने वाले लोगों के दृष्टिकोण को अपने पक्ष में करने के लिए विभिन्न दबाव समूह प्रेस, रेडियो, टेलीविजन और सार्वजनिक सम्बन्धों के विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग करते हैं।

③ आँकड़े प्रकाशित करना – नीति-निर्माताओं के समक्ष अपने पक्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दबाव समूह आंकड़े प्रकाशित करते हैं, ताकि अपनी बात को पूरा करवा सकें।

④ गोष्ठियाँ आयोजित करना – आजकल दबाव समूह, विचार-विमर्श तथा वाद-विवाद के लिए गोष्ठियां, सेमिनार एवं वार्ताएँ आयोजित करते हैं। गोष्ठियों में विधायिका तथा प्रशासिका के प्रमुख अधिकारियों

Scanned with CamScanner

को आमंत्रित करते हैं और उन्हें अपने मत से प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

(5) प्रदर्शन - कभी-कभी दबाव समूह उग्र आन्दोलनात्मक तथा प्रदर्शनकारी साधनों का भी प्रयोग करते हैं। जैसे - हड़ताल, जुलूस, रैली इत्यादि।

(6) संसद के मनोनयन में रुचि - दबाव समूह ऐसे व्यक्तियों को चुनावों में दलीय प्रत्याशी मनोनीत करवाने में मदद देते हैं जो आगे चलकर संसद में उनके हितों को पूरा करने में सहायक हो।

Scanned with CamScanner